

भोर समय श्री जनक नन्दनी सासु सेवा को जाती हैं ।
 कनक थार में पूजन के हित सखियां साज सजाती हैं ॥
 नख शिख लौं श्रंगार मनोहर शोभा सागरि राम प्रिया
 जिनकी नख के आगे लाजत है कोटि काम हुलसाती है ॥
 बाल मराल सी चलत है स्वामिनि चहु दिशि हो है
 नीलम साड़ी पहिने प्यारी आवत जनक दुलारी है
 मानो घनमण्डल के भीतर दामिनि सी दमकाती है ॥
 जननी कान पड़ी नुपूर धुनि लोचन ललन दरस लागी
 मंजु मनोरथ मगनु भई उठि उठि बैठत है अतिरागी
 प्यासी दृष्टि द्वार लौ आकर देखन को अकुलाती है ॥
 शील सनेह संकोच से स्वामिनि सास निकट जबहीं आई
 अति अनुराग सो पग वन्दन कर मातु गले माला पहनाई
 वात्सल्य रस उमिड़यो जननी उर फूली अंग न समाती है ॥
 कोटि चंद्र प्रकाश प्रिया के अंग अंग में झलकत है
 रूपु निरखि सासु निर्मल नेणनि से आनंद अश्रु छलकत है

बार बार भरि अंक बालि को मन तन मोद बढ़ाती है ॥
अनंत अनंत कृपा आदर से मस्तक सूंघती है मैया
हर्षि निरखि सुकुमार लालि को लेती बारम्बार बलैया
निर्धन जिमि धनराशि पाइ के ललकि ललकि ललचाती है ॥
इक टिक मुख छबि निरखि कौशल्या देत आशीश अघाय के
रोम रोम रस सरित मगन भए कोटि अमर सुख पाय के
कौन कहां हूं गई भूलि सब रूप की थाह न पाती हैं ॥
रोम रोम रसना से मैया देत आशीशें मोद भरी
रवि शशि सम प्रताप तुम्हारो रहे प्रकाशित घड़ी घड़ी
नित्य सुहागिणि तूं वदभाणि प्रीतम प्राणनि थाती है ॥
रूपशील नेह परानिधि मेरी जीवन मूरि लली
चिर चिर जीओ राम रसीली नितनित निरखों भांति भली
निगम नन्दिनी कीरति तेरी गरीबि श्री खण्डि गाती है ॥